मजलिस -7

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिके यौमिददीन। (सलवात)

अलहम्द कह कर बताया गया कि वो ख़ालिके काएनात मजबूर नहीं है फैज़ रसानी में बल्कि बा इरादा व इख़्तेयार फैज़ पहुँचाता है। और इरादे का मतलब क्या है जब चाहे करे जब चाहे न करे। मैं पन्द्रह मिनट पहले भी आ सकता था। मजलिस में। नहीं आया, पन्द्रह मिनट बाद आया। क्यों आया? इसलिये कि इरादा है मेरा। जब मैंने इरादा किया। तब अमलज़ाहिर हुआ। तो एक अलहम्द कह देने से पूरे फ़लसफे को बातिल कर दिया। जिन्होंने तख़लीके़ कायनात में फैज़ रसानी में अल्लाह को मजबूर करार दिया था। और जब अल्लाह मजबूर होता फिर न शुक्रिये कि ज़रूरत थी, फिर न उसकी मद्हो व सना की हाजत थी इसलिये कि जो चीज़ जबरी हो उसमें फिर तारीफ़ काहे की तो फिर अलहम्द कह कर उस इत्तेफाक़ के इरादी और अख़तियारी होने की तरफ इशारा कर दिया और एक अलहम्द ने कितना दायरा फैला दिया। ये नहीं कहा गया कि अल्लाह के लिये तारीफ़ें हैं बल्कि इरशाद हुआ कि अल्लाह के लिये तो हर तारीफ़ का कोई जुमला आये हकी़कत में वह अल्लाह की तारीफ़ हैं अब जो कल बयान कर चुका हूँ उसको दोहरा नहीं रहा हूँ। सिर्फ़ इशारा, क्यों अल्लाह की तारीफ? इसलिये कि इस काएनात में जो कुछ है वो सब सानेअ अज़ल ही की सनअत है। जब उसी की सनअत है तो जब भी किसी सनअत की तारीफ़ करे तुम, सानेअ की तारीफ़ होती है लेहाज़ा जब भी किसी शया कि तारीफ़ करोगे, तो जो सानए अज़ल है, उसकी तारीफ़ होगी, और कुरान कहेगा अलहम्दोल्लिाह हर तारीफ़ अल्लाह के लिये।

अब मैं। आपकी ख़िदमत में एक बात पेश करना चाहता हूँ मेरे दिल में जो शुब्हा आया उसको क्यों न अर्ज़ करूँ? मैं ने अभी अर्ज़ किया कल अर्ज़ कर चुका हूँ और अभी–अभी। मैंने इजादें कीं लेकिन अल्लाह की हम्द क्यों? इसलिये कि वो अक़्ल जिसने इजाद किया वो अल्लाह ने दी। वो आज़ा व जावारेह जिससे किसी चीज़ को बनाया वो अल्लाह के दिये हुऐ ये आंखें उसने दीं थीं वो न देता तो मैं कैसे किसी चीज़ की सनअत को बनाता? ये उंगलियाँ उसने दी थीं अगर उंगलियाँ नहीं उंगलियों में सिर्फ लोच न होता तो फिर मैं सनअत को अपनी ज़ाहिर क्यों कर सकता?

तो मालूम हुआ कि सब अल्लाह का दिया हुआ है। हर हम्द अल्लाह की अब मैं यहाँ पर एक बात अर्ज़ कर रहा हूँ। मैंने बड़ी अच्छी बातें कीं हिदायत की नेक राहें दिखईं बहुत से झूठे थे तक़रीर को सुन के अब उन्होंने तोबा कर ली कि अब झूठ नहीं बोलेंगें। बहुत से राशी थे जिन्होंने मेरी तक़रीर सुन कर (मुझे नहीं मालूम कभी ऐसा भी हुआ है) मसअलन अर्ज़ कर रहा हूँ। मेरी तकरीर सुन कर रिश्वत से उन्होंने तौबा कर ली। बहुत से बेनमाज़ी थे जब मैंने नमाज़ की फज़ीलत और तरके नमाज़ का अज़ाब बताया तो वो नमाज़ के पाबन्द हो गये। मैंने अपनी ज़बान से बहुतों को फ़ायदा पहुचाया। न मालूम कितने थे जो फिसल रहे थे मैंने हाथ बढ़ा कर संभाल लिया यह सब अल्लाह का फैज़ था न ज़बान देता न हाथ देता न मैं दूसरों का सहारा बनता।

लेहाज़ा जब मेरी तारीफ़ की तो अस्ल में अल्लाह की तारीफ़ हुई।

लेकिन अब एक बात, अर्ज़ करूँ उसी ज़बान से जिससे मैंने हिदायत की उसी से तो गुमराह भी किया। अरे ग़लत बातें भी तो उसी से लड़ाई कि बेचारे सीधे–सीधे समझते हैं कि यहीं बस ठीक है। समझा दिया गया कि अब क्या ज़रूरत है तुम्हें नमाज़ पढ़ने की मजलिस में तो आ ही गये? अब क्या ज़रूरत है इसलिये कि वो तो बख़्शिश का तुम्हरे सहारा बन गया? वादा है कि जिसने आँखों से आँसू बहा लिये ''वजबत लहुल जन्नत '' अब मेरे लिये जन्नत वाजिब ही हो गयी। अब दूसरे आमाल की ज़रूरत क्या? मगर दूसरा पहलू नहीं बयान किया कि अगर खाली रो लेना ही जन्नत वाजिब कर देता। मआज़ अल्लाह कह रहे हैं तौबा करके, तो हुरमुला भी तो रोया था, यज़ीद भी तो रोया था जो रातों को रोता था''माली उल हुसैन'' मेरे हुसैन ने क्या कसूर किया था जो मैंने शहीद कर कर दिया। क्या दुशमनाने अलहलेबैत (अ0) नहीं रोये? तो सब पर जन्न्त वाजिब। तो यहीं से मालूम हुआ कि जन्नत यक़ीनन रोने से वाजिब होती है, लेकिन मारेफ़त के साथ रोना, हुसैन (अ0) की अज़मत पहचान कर रोना, ये आँसू वैसे न हों कि जैसे सिनेमा में सुना लोग रो देते हैं या जैसे नाविल कोई पढ़ते हैं और उसमें रो लेते है। बल्कि ये आँसू वो हों जो मोहब्बत के सहारे निकल रहे हों। और जब आंसू मारेफत और मोहब्बत के साथ निकलेंगें तो किरदारे हुसैनी पेशे नज़र रहेगा अमल की कोशिश भी होगी और फिर मैं कोशिश करूँगा कि मोहब्बत के जो तक़ाज़े हैं उनको भी पूरा करूँ। उलफ़त के जो मुतालबे हैं उनको भी पूरा करूँ तो मैंने उसी ज़बान से ये भी तो बता दिया कि नमाज़ क्या किजियेगा पढ़ के, बिलावजह सवेरे उठियेगा रात भर की नींद खराब किजियेगा? बस काफ़ी है। और मैंने ही तो बताया कि अगर तुम मोहब्बते अहलेबैत (अ0) रखते हो तो किसी अमल कि ज़रूरत नहीं

मैं क्या अर्ज़ करूँ। मेरी ज़िम्मेदारी है इसलिये अर्ज़ कर रहा हूँ। न किसी पर मैं चोट करता हूँ न किसी की मैं मुखालेफ़त करता हूँ। मेरी सीधी साधी मजलिसें होती हैं। मेरी जो ज़िम्मेदारी है उसको अदा करना लाज़िम है। मोहब्बत के कुछ तक़ाज़े होते हैं। और उनको नहीं पूरा करो तो दावाए मोहब्बत सच्चा नहीं समझा जाता। अल्लाह ने भी मेआरे मोहब्बत यही बताया है ''इन कुनतुम तोहिब्बुनल्लाह फत्तबेउनी'' अगर अल्लाह से मोहब्बत है तो नबी की पैरवी करो। तो मालूम हुआ कि मोहब्बत परखी जाती है इत्तेबा व पैरवी से अगर इत्तेबा व पैरवी न हो तो मोहब्बत का दावा परख के ऊपर पूरा नहीं उतरता। और उन लोगों की जो मिंबर पर आते हैं बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। ये मिंम्बर ग़लत इस्तेमाल कि जगह नहीं है। ये मिंम्बर वो है कि जिस के हक़दार मोहम्मद व आलेमोहम्मद (अ0) दूसरों ने छीन लिया था, हक़ नहीं रखते थे। लेहाज़ा यहाँ जिन लोगों को आना है उनको आलेमोहम्मद (अ0) की तबलीग करना है आले मोहम्मद (अ0) के मक़सद की। उनको मुंहरिफ़ न करना चाहिये आले मोहम्मद (अ0) के मक़सद से। इस मिंम्बर की ज़िम्मेदारी समझ कर बैठना चाहिये कि हम किस जगह बैठे हैं।

कभी–कभी ये कह दिया जाता है कि साहब हम मिंम्बर पर जिस पर बैठे हैं दो मिंम्बर हैं एक मिंम्बर है मस्जिद का और एक मिंम्बर है ग़दीर का। मस्जिद के मिंम्बर से बताओ की नमाज़ वाजिब, मस्जिद के मिंम्बर से बताओ तकवा ज़रूरी, मस्जिद के मिम्बर से बताओ कि आमाले ख़ैर करो और ग़दीर के मिंम्बर से फ़ज़ायले अहलेबैत (अ0) जिन्होंने मिंम्बर को तक़सीम किया मैं उनकी ताईद नहीं करता इसलिये कि मैंने देखा है कि मिंम्बर से तक़सीम नहीं हुआ ग़दीर में ''मन कुन्तो मौला'' सुना आपने। खुतबए ग़दीर के मिंम्बर भी तो सुन लिजिये जब रसूल (स0) ने ख़ुत्बा फ़रमाया उसी ग़दीर की मिंम्बर पर तो

तौहीद की तालीम दी। रेसालत का पैगाम पहुँचाया। क्या आपने ये नहीं सुना कि रसूल (स0) ने पूछा था कि क्या मैंने नमाज़ पहुँचाई? सब ने कहा अलहुम बला क्या मैंने रोज़ा पहुँचाया तो सब ने कहा ''अल्लाहुम बला'' इसी मिंम्बरे ग़दीर से अहकामे शरई बयान किये गये फिर विलायते अली (अ0) का ऐलान किया गया तो ग़दीर के मिंम्बर में अहकामे शरई नज़र आये। तो क्या मस्जिद का मिंम्बर अलग? तो क्या मस्जिद का मिंम्बर नहीं था जिससे फज़ायले हुसैन (अ0) बयान किये गये थे वो मस्जिद का मिंम्बर ही तो था जिससे उतर कर हुसैन (अ0) को गोद में लेकर फिर मिंम्बर पर गये थे? वो मस्जिद ही का मिंम्बर तो था जिससे कह रहे थे '' हाज़ा हुसैनुम फ़ारेफु'' ये हुसैन है इसको पहचान लो। ये मस्जिद ही का मिंम्बर तो था जिससे कह रहे थे ''अहब्बल्लाहो मन अहब्बल हुसैना अबग़ज़ल्लाहो मन अबग़ज़ल हुसैना'' तो ये न कहिये कि मस्जिद का मिंम्बर अलग ग़दीर का मिंम्बर अलग। बल्कि मिंम्बर है रसूल का और आले रसूल (स0) का इसलिये मक़सदे रसूल और आले रसूल (स0) में सर्फ़ होना चाहिये (सलवात)

बड़ा मुशकिल होता हे ज़िम्मेदारी को संभालना। होता ये है, मुआफ़ फरमायें तल्ख़ नवाई को मैं बस इसका आदी हो गया हूँ कि बस वाह–वाह किस पर कहते हैं? और सलवात किस पर भेजते हैं? बस यह वाह–वाह की लालच वो है कि मैं सच कहता हूँ कि ये जानते हैं कि जो कह रहा हूँ। सही नहीं है। लेकिन अगर कह दिया कि भय्या नमाज़ें पढ़ो सत्तरह रकअत, और रोज़े रखो और देखो तुम्हारे ऊपर फर्ज़ है कि खुम्स भी अदा करना और ज़कात भी देना तो लोग घबराएगें इसीलिये तो आते नहीं हैं मोएज़ों में मस्जिद के मोएज़े जो होते हैं सन्नाटा होता है। कि वहाँ तो फराएज़ बताए जाते हैं।

और ज़रा तवज्जो फरमायें कि रसूल (स0) ने कहा दो चीज़ें छोड़ता हूँ एक खुदा की किताब दूसरे मेरे अहलेबैत (अ0)। मेरी समझ में नही आया कि रसूल (स0) ने दो चीज़े छोड़ीं तो मैंने कहा मेरे लिये एक ही चीज़ काफ़ी । ये क्यों इसके पीछे जज़बा क्या था? मेरी नज़र में तो उसके पीछे जज़बा यही था कि कुरआन तो बेचारा चुपका है जो चाहे करें वो टोके–रोकेगा नहीं। कोई ऐतेराज़ करेगा तावील कर लेंगें। इसका मतलब ये इसका मतलब वो। और अहलेबैत (अ0) के दर पर आयेंगें तो वहाँ हम तावील ग़लत नहीं कर सकते, वो चिपके थोड़ी रहेंगें वो खुद बतायेंगें कि ये गलत कर रहा हैं तो चुँकि अहलेबैत (अ0) के दर पर आना ज़िम्मेदारियों को बढ़ा देता है लेहाज़ा उनको छोड़ो खाली कुरआन को लेलो। तो ये बेअमली का जज़बा था जिसने अहलेबैत (अ0) को छुड़वाया खुदा न करे कि हम में ये जज़बा पैदा हो जाये। शायद आपको न मालूम हो तो मैं आपको बताऊँ कि अहलेबैत की मुखालेफ़त में जो मज़हब ईजाद किये गये हैं। उन मज़हबों में एक मज़हब वो है कि जिसको कहते हैं ''मरहबा'' मरहबा मज़हब ये मज़हब ईजाद किया गया अहलेबैत (अ0) की मुखालेफ़त में और मरहबा मज़हब का मतलब क्या है? कि बस ईमान काफ़ी है।, नजात के लिये अमल की ज़रूरत नहीं। मुशकिल क्या पड़ी थी कि एक तरफ़ रसूल (स0) की सीरत दावेदाराने नयाबत की ज़िन्दगी। कुरआन कह रहा है इन्नमा अलख़मारो वलमिसरो अननेसाब वलज़लेमा मनजस मन मनअमालस शैताना शराब जुआ गंदगियां ये सब शैतानी अमल हैं। और जो लोग कह रहे हैं हम नाएबे रसूल (स0) वो शराबी खाली पी नहीं रहे है। शराबियों के हौज़ में गोते लगा रहे हैं। ये मैं मिसालन नहीं कह रहा हूँ मैं एक मरतबा अर्ज़ भी कर चुका हूँ। शायद साले गुज़िशता ही मुसलमानों ने हर चीज़ में हर क़ौम का रेकार्ड तोड़ दिया है। अगर वो तक़वा परहेज़गारी और इल्म में बढ़े तो इतना बढ़े कि जवाब नहीं मिला। मगर सिर्फ यही नहीं हज़ूर शराब पीने में भी रेकार्ड है एक दो जाम तुम पियो, एक दो बोतलें

तुम ख़त्म करो जब हम आयेंगें शराब पीने पर तो हौज़ था शराब का और जब मुँह लगा कर पीते थे तो हौज़ के कराने ख़ाली हो जाते थे। अब कितनी बोतलें उड़ा जाते होंगें एक मुँह में? तुम ने कपड़े पहने? हमारे यहाँ बेग़मात के कपड़े मशहूर हैं। कि पहले बेग़मात के कपड़े ऐसे होते थे कि पायचे उठा कर पीछे कनीज़ें चलती थीं। और जब आगे बढ़े हम तो उमवी बादशाह हाशिम साहब जो जुब्बा पहने रहते थे वो इतना होता था कि खुद एक ऊँट पे होते थे दूसरे ऊँट पर जुब्बे का दामन रखे होते थे। खाना खाने पर आये तो इतना कि आये कोई मुक़ाबला कर ले। अखबारात में मैंने देखा कि फलाँ साहब बीस अंडे एक वक़्त में खाते हैं और सवा सेर गोश्त की यख़नी पीते हैं। और न मालूम कितने वो चावल खाते हैं। बस लेकिन जब मुसलमानों ने खाने का रेकार्ड क़ायम किया तो कितना। ख़ाली नाशते के लिये एक और बादशाह सुलैमान साहब बैठे। नहा के निकले थे अभी खाना नहीं था ज़रा भूख लगी थी, कुछ ले आओ अस्सी मुर्गियाँ सिर्फ पट–पटा कर दी जाती थीं और ख़त्म हो जाती थीं और जब दस्तरख़्वान पर बैठे हैं तो ज़रा सी गेज़ा में कमी नहीं आई। जितना खाते थे उतना ही खाया। दिन भर खाने के बाद दो तरफ़ दो तश्त रख दिये जाते थे जिनमें हलवा भरा रहता था। रात को जब उठते थे कुछ इधर से कुछ उधर से और सुब्ह को दोनों तश्त खाली होते थे। दावत है तमाम कौमों को कोई ले आये इतना बड़ा खाने वाला।

तो मालूम हुआ कि मुसलमानों ने हर चीज़ में रेकार्ड क़ायम किया है। अच्छाइयों में भी और बुराइयों में भी। अब ये सब है, जुवा है, शराब है, बदएख़लाक़ी है, बदकारी है, बेअमली है, और है दावा कि हम हैं नाएबे रसूल। अब हो कैसे? साहब ये और रसूल (स0) लेहाज़ा हदीसें बनाई गयीं कि बस ईमान काफ़ी है अमल की ज़रूरत ही नहीं। बेनमाज़ी हुऐ तो क्या? बेरोज़ादार हुऐ तो क्या? दूसरों के हक़ ग़स्ब किये तो क्या? मोमिन तो हैं अल्लाह को तो मानते है।? रसूल का कलाम तो पढ़ते हैं? लेहाज़ा हम सिवाए जन्नत के कहीं जायेंगें ही नहीं। ''मन काला लाइलाहा–इल्लल्लाहो दख़ललजन्नतो'' जिसने ला इलाह कहा वो जन्नत में दाखिल हुआ। तो सिर्फ़ यही नहीं चाहे उसने शराब पी हो, चाहे उसने जुआ खेला हो, चाहे ख़ताकार हो, ये तो था फ़िरका जो कहता था कि खाली ईमान काफ़ी अमल की ज़रूरत नहीं। ये दुशमनीए अहलेबैत (अ0) में फ़िरका गढ़ा गया था। मैं कहता हूँ कि दोस्तदाराने अहलेबैत (अ0) तुम्हारी तरफ़ से कोई बात ऐसी न होनी चाहिये कि जिससे इस फ़िरके की ताईद हो जाये, जो अहलेबैत (अ0) की दुशमनी में मशहूर व मारूफ़ था।

तो ख़ैर मैं अर्ज़ कर रहा था कि इसी ज़बान से सब मैंने वो भी तो कहा कि जिस से लोग ग़लत राह में पड़ गये। जिस हाथ से मैंने सहारा दिया उसी हाथ से तो मैंने तमाचा भी यतीम के मारा। जिस पैर से मैं गया था तालीमे दीन हासिल करने के लिये उसी पैर से तो पूरी करने भी तो गया। जिस अक़्ल से मैंने अहकामे इलाही का इस्तेम्बात किया उसी अक़्ल से तो मक्कारियाँ भी कीं। तो जब सब कुछ अल्लाह का दिया हुआ है उससे अच्छे काम किये तो अल्लाह की तारीफ़ न वो देता न हम करते तो अब उसका उलटा क्या हुआ कि अब जब बुराइयाँ मैंने कीं तो उन्हीं आज़ा व जवारेह से तो कीं जो अल्लाह ने दिये थे। मआज़ अल्लाह–मआज अल्लाह सिर्फ़ समझाने के लिये अर्ज़ कर रहा हूँ मेरी ज़बान जल जाय। तो चोरी की तो अब तुम अपने को न कहो इधर निस्बत दी तो झूठ बोले तो हम को क्यों बुरा कह रहे हैं
इधर कह दिजिये। जो कुछ कीजिये इल्ज़ाम उस पर आ जाये न वो देता न हम करते तो क्या ये दुरूस्त है? तो अगर ये दुरूस्त नहीं तो वो भी दुरूस्त नहीं अगर मज़म्मत मेरी है तो तारीफ भी मेरी। मगर मैं मिसाल से एक मतलब वाज़ेह करूँ। आजकल हर तरफ चोरी और डाके के

ज़ोर हैं। मैं देहात में रहता हूँ और डाके पड़ चुके थे कई। मैं ज़मींदार था अब भी मेरे पास थोड़ा बहोत पैसा है मैं शहर में आया, मैंने दरख्वास्त दी कि ये हालात है। लेहाज़ा मुझे लाइसेन्स दे दिया जाये बंदूक का । डी0 एम0 साहब ने देखा कई वारदातें हो चुकी है।, उनकी हिफाज़त के लिये लाइसेन्स उन्होंने दे दिया। अब लाइसेन्स लेकर चला मैंने ढूडंना शुरू किया कि लखनऊ में कहाँ बंदूक बहोत अच्छी मिलेगी और फलाँ जगह मालूम हुआ कि उनके पास बहुत अच्छी बंदूक है और वो मैंने ले ली। और अब जिसने देखा बंदूक़ की तारीफ की कि ये तो अब मिलती ही नहीं है आजकल, अरे ये तो जर्मनी की अमरीका की कहाँ कि फलाँ कम्पनी कीबनी हुई है। तो जवाब ही नहीं देखिये निशाना भी बहोत अच्छा है इसका। मार भी बहोत है बड़ी तारीफें बंदूक़ की। और मैं वो बंदूक़ लेकर आया और झगड़ा हो गया मोहल्ले में मुझ से किसी और से और अब गुस्से में मैं भरा हुआ अन्दर गया खुद तो भरा ही था बंदूक भर के लेके आया। और फायर कर दिया। और वो बेचारा मर गया। मुक़दमा हुआ पकड़ गया। मुकदमें में मैंने कहा साहब आप मुझ पर क्यों इल्ज़ाम देते है। पहले तो डी0 एम0 साहब को पकड़िये न वो लाइसेन्स मुझे देते न मैं बंदूक़ खरीद सकता। और फिर दुकानदार को जाकर पकड़िये न वो बेचता न मेरे पास बंदूक़ आती। और फिर उस कम्पनी को देखिये जिसने बनाई। न वो बनाती न बिकती, न मैं खरीदता, न किसी को मारता कत्ल करता तो लेजाकर सबको सज़ा दीजिये मैं तो बेचारा मजबूर हूँ। तारीफ़ हुई थी। बंदूक की बड़ी उम्दा कम्पनी है, कैसी बनाई जुर्म हुआ तो अब कोई नहीं पकड़ा जाता, अकेला मैं पकड़ा जा रहा हूँ। क्यों? अगर डी0 एम0 साहब ने लाइसेन्स इसलिये दिया होता कि इससे किसी को कत्ल कर दूँ बिला खता, अगर दुकानदार ने इसलिये बेची होती कि ले जाकर उसका ग़लत इस्तेमाल करूँ तो वो भी मेरे साथ जुर्म में शरीक हो जाते। मगर उन्होंने दी थी सही मकसद के हिफ़ाज़त के लिये। मैंने ग़लत इस्तेमाल किया ग़लत इस्तेमाल करने वाला मुजरिम है गलत इस्तेमाल का सही इस्तेमाल के लिये देने वाला मुजरिम नहीं। अगर ज़बान अल्लाह ने झूठ के लिये दी होती अगर हाथ जुल्म के लिये दिया होता। अगर पैर गलत राह में बढ़ने के लिये दिये होते, तो इल्ज़ाम उस पर आता। जब उसने ये सब दिया नेक मकसद में इस्तेमाल करने के लिये और मैंने गलत इस्तेमाल किया तो मुजरिम मैं हूँ मदह उसकी। (सलवात)

जो गलत इस्तेमाल करता है वो पकड़ा जाता है कि इस मकसद से नहीं दिया था और शायद आप कहें कि हमें क्या मालूम कि गलत इस्तेमाल क्या था और सही इस्तेमाल क्या है? हमें क्या पता कि आँखें उसने किस इस्तेमाल के लिये दी थीं? कुदरत ने इतमामे हुज्जत के लिये कहा कि ये न कहना कि हमें पता नहीं। अगर तुम्हें देकर छोड़ दिया होता तो तुम कहते हमें पता ही नहीं था उसी का तो ऐहतेमाम किया था मैंने किसी दौर को अपने किसी हादी व रहनुमा से खाली छोड़ा ही नहीं। आदम (अ0), नूह (अ0) इब्राहीम (अ0), मूसा (अ0) ईसा (अ0), खातेमुन्नबीईन (स0), सैयदुल मुर्सलीन (अ0), अमीरूल मोमनीन (अ0), हसन (अ0), हुसैन (अ0), ज़ैनुलआबेदीन (अ0), ये सब क्यों आये उनका मकसद था कि अल्लाह ने जो नेअमतें दीं हैं उनका इस्तेमाल क्योंकर करूँ। ज़बान से क्या कहूँ आंख से क्या देखूँ हाथ से क्या करूँ जिस्म से किस राह में चलूँ किस राह में न चलूँ तो अब बता भी दिया गया तो अब ग़तल इस्तेमाल की ज़िम्मेदारी मुझ पर है देने वाले पर नहीं। (सलवात)

और इसी लिये अलहम्दो लिल्लाह हर हम्द, हर तारीफ़, हर सताइश उस अल्लाह की लेकिन जब मज़म्मत का मौका आया तो इरशाद हुआ '' सब्बेहिस्मा रब्बेकल आलल्लज़ी ख़लका फसव्वा'' देखो उस अल्लाह की तसबीह करो जो बहोत बलन्द है जिसने तुझे पैदा भी किया। और तेरी तख़लीक़ को कामिल करार दिया ''बसह''

तस्बीह के क्या मआनी। तस्बीह के मआनी हैं पाकीज़गी तस्बीह के मआनी हैं ऐलाने तहारत। सबहा इस्म, अल्लाह के नाम की तस्बीह करो, यानी अल्लाह की तरफ़ किसी ग़लत काम की निस्बत न दो पाक व पाकीज़ा असमाह अल्लाह के लिये हैं '' लिल्लाहिस्माअलहुस्ना'' अल्लाह के लिये अच्छे और पाकीज़ा नाम हैं तो मालूम हुआ, सुब्हा हर जगह ''बिस्मिल्लाह माफ़िस्समावाते'' अल्लाह की तस्बीह करती हैं तमाम वो चीज़ें जो आसमान व ज़मीन में हैं, उसकी पाकीज़गी का ऐलान कर रही है।। बता रही हैं कि हर ऐब से उसकी ज़ात बरी है । हर नक्स से वो बलन्द है। मुखतलिफ़ आयतों में ''युसबहुल्लाह'' सूरए जुमा में अल्लाह की तस्बीह व तक़दीस करती हैं। तमाम वो चीज़ें जो ज़मीन व आसमान में हैं। ''बिस्मिल्लाह माफ़िस्समावाते वमाफ़िलअरज़ अलमलोकलकुद्दूस।''

अब एक बात कहूँ ज़रा तर्जुमा कीजिये ''युसब्बहुल्लाह'' अल्लाह की तस्बीह व तक़दीस करती हैं तमाम वो चीज़ें जो आसमानों में और तमाम वो चीज़ें जो ज़मीनों में हैं। तस्बीह के मआनी हैं पाक करना अब मैं तर्जुमा कर रहा हूँ अब ये न कहियेगा कि तुम काफ़िर हो गये। समझाने के लिये अर्ज़ कर रहा हूँ। जब भी मैंने तर्जुमा किया कि अल्लाह को पाक करती हैं वो चीज़ें जो आसमान में हैं और तमाम वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं क्या सही तर्जुमा किया मैंने? वो पाक करती हैं क्या मतलब? वो तो पाको पाकीज़ा है उसकी ज़ात तक किसी नक्स व ऐब का गुज़र ही नहीं तो ये पाक करने का क्या मतलब? उसने पाक पैदा किया उसको कौन पाक करेगा तो फिर ''यसबाह'' के क्या मआनी हुऐ? कहा बेअक्ल तुझे मालूम नहीं। अरे जो चीज़ पाक नहीं होती वा पाक की जाती है और वो जो पाक होती है और उसके लिये कहा जाये तस्बीह का लफ़्ज़ या ततहीर का लफ़्ज़ तो वहाँ पाक करना मुराद नहीं है। वहाँ मुराद है ऐलान व इज़हार तो तस्बीह अल्लाह की करती हैं सब चीज़ें। क्या मतलब? कि अल्लाह की तहारत व पाकीज़गी का ऐलान व ऐकरार करती हैं। मैं कहूँगा याद रखिये। तस्बीह बाबे तुफैल। बाबे तुफैल से मक़सद है । तस्बीह और आपने तर्जुमा ये नहीं किया कि पाक करती हैं। तर्जुमा किया कि ऐक़रार व ऐलान करती हैं तमाम वो चीज़ें जो ज़मीन व आसमान में हैं अल्लाह की तहारत का, क्यों? इसलिये कि वो पाक है लेहाज़ा पाक करने का काई सवाल ही नहीं। मैं कहूँ अब समझ गये आप। तो जिस बाब से है तस्बीह उसी बाब से है ततहीर। जिस तरह है तस्बीह उसी तरह है युताहर । जब एक ही बाब से है तो एक ही मतलब कहियेगा। अब जब आयते ततहीर उतर कर कहे ''इन्नमा युरीदुल्लाहो लेयुज़हेबा अनकुमर रिजसा अहललबैते युतहहेरेकुम ततहीरा'' तो ये न कहियेगा कि अल्लाह पाक करता है उसके मआनी ये हुऐ कि पहले नजिस थे, आयते ततहीर के बाद पाक हुऐ नहीं जिस तरह तस्बीह के मआनी अल्लाह अगर नजिस होता तो तस्बीह के माअनी होते पाक करना मगर वो पाक है इसलिये उसका मतलब है ऐलाने तहारत तो आय–ए–ततहीर पाक करने के लिये नहीं उतरी आय–ए–ततहीर ऐलान करने के लिये उतरी है कि ये पाक व पाकिज़ा हैं।

साहेबाने इल्म ज़रा गौर फरमायें कुरआने मजीद में एक आयत है ''अनज़लना मिनस्समाए मा तहूरा'' हमने आसमान से पानी को नाज़िल किया जो ''तहूर'' हे तहूर के मआनी क्या? मुबालगा बहोत ताहिर, बहोत पाक ये ऐखतेलाफ जो है इमामे शाफाई और इमामे अबू इनीफा में है। इमामे अबू हनीफा ने कहा कि तहवरा मुबलेगा है, बहोत ताहिर, तो ये बहोत ताहिर के क्या मआनी? इसलिये कि ये चीज़ पाक होगी या नजिस। अगर नजिस है तो बिल्कुल नजिस अगर पाक है तो बिल्कुल पाक। ये बहोत पाक क्या होता है? तो इमाम शाफ़ई ने उसका मतलब बताया। वो फरमाते हैंकि बहुत पाक का मतलब आप नहीं समझे बहुत पाक का मतलब ये हे कि

एक शया हाती है खुद पाक मेरी उंगली पाक है लेकिन किसी नजिस चीज़ को मैं पाक नहीं कर सकता उंगली से मिल के। लाख नजासत से मिलूँ वो नजिस ही रहेगी। हाथ नजिस हो जायेगा वो पाक नहीं होगी तो एक चीज़ होती है खुद पाक और एक चीज़ होती है दूसरों को पाक कर देने वाली तो तहूर का मतलब ये है कि पानी खुद तो पाक है ही दूसरी नजिस चीज़ों को पाक भी कर देता है। इमामे शाफई ने मतलब बताया कि तहारत में मुबालग़े का मतलब होता है दूसरे को पाक कर देना। अब आयए ततहीर तक आइये। क्या हुआ ऐलान ''लेयुज़हेबा अनकुमुर्रिसा'' तुम से हर रिज्स को दूर रखे। जब गंदगी दूर तो नजासत आयेगी ही क्यों कर? युज़ हब ने कहा पाक, युतहहरकुम तुम्हें पाक रखे युतहहरकुम ने कहा पाक फिर आया ततहीरा। उस तरह पाक रखे जो पाक रखने का हक है कहता हूँ कि ये तहारत में मुबालगे के मआनी क्या? यहाँ भी वही मतलब होगा जो तहूर का था। पानी खुद पाक है एसा जो दूसरों को पाक कर दे। ये खुद तो पाक है ही उनकी मोहब्बत गुनाहगारों को भी पाक कर दिया करती है। (सलवात) ये खुद ही पाक हैं बल्कि दूसरों को पाक भी कर दिया करते हैं।ऐसे पाक जो दूसरों को पाक कर दें।

और ज़रा ग़ौर फ़रमायें एक पानी होता है क़लील और एक पानी होता है कसीर। लोटे में पानी है मैंने अपने हाथ पर पानी डाला पाक हो गया। वही लोटे का पानी हाथ पे डाला पाक हो गया। लेकिन फ़र्क कुछ नहीं हुआ अब मैंने खुद हाथ लोटे में डाल दिया, उसी लोटे में, अब क्या हुआ? पानी भी नजिस। यानी कुछ पाक ऐसे होते हैं जो नजासत से अलग रहते हुऐ दूसरों को पाक करना चाहें पाक कर देंगें। लेकिन नजासत उनमें भी असर कर सकती है, तो पाक किरदार रखने वाले कभी–कभी नजिस भी हो जाया करते हैं, एक है तहारते क़लील वो नजासत कबूल कर लेती है। और एक है तहारते कसीर। हौज़ है अब हौज़ में मैंने वही हाथ डाला दस मरतबा भी नजिस हाथ डालूँ हौज़ नजिस नहीं होगा। क्यों इसलिये कि आबे कसीर है। लेकिन ये मिसालें दे रहा हूँ हक़ीक़त पर कभी अमल न कीजियेगा। मिसालें और हैं हक़ीक़त और है। मिसालें समझाने के लिये होती हैं। लेकिन कभी नजासत इतनी गिरी थोड़ा सा रंग मुतगय्यर हो गया तो जितना रंग मुतगय्यर है उस हद तक नजिस लेकिन थोड़ी देर के बाद पानी के छींटे पड़ी पूरे पानी में मिल गयी नजासत। अब पाक है कसीर। लेकिन एक धब्बा पड़ सकता है जो खुद ही दूर हो जायेगा जब पानी मिल जायें लेकिन ये जो बाराने रहमत बरसरहा है। नजासत पर पड़ कर भी छींट आप पर पड़े तो जब तक पानी बरस रहा है हर हाल में पाक। ये नजिस नहीं हो सकता। बरसने वाला पानी तो उधर से जो पानी ताहिर नाज़िल होता है वो किसी हाल में नजिस नहीं हुआ करताँ मैं कहूँगा कि इसीलिये कहा मैं पाक करना चाहूँगा ये वो तहारत है जिसमें नजासत आ ही नहीं सकती है वो बलन्द इसमत कि अंबिया और मलायका तक में तरके औला आ गया मगर यहाँ अहलेबैत (अ0) की इसमत इतनी बलन्द कि जहाँ तरके औला का भी इमकान नहीं। जहाँ तरके औला की भी गुंजाइश नहीं। आदम (अ0) को भी तौबा की ज़रूरत पड़ी तरके औला हो गया नूह (अ0) से भी कहा जायेगा कि अरे ये क्या कह रहे हो ''अन अंबिया मिन अहली'' मेरा बेटा मेरे अहल से है और वादकल हक तूने वादा किया था अहल को बेचाएगा। तंबीह की गयी कि क्यों तुम ने औलाद को अपने अहल में दाखिल किया ''इन्नहू लैसा मिन अहलिक'' ये तुम्हारे अहल से नहीं है। ये अमल गैर सालेह है। तुम आम अफराद में थोड़ी दाखिल हो कि जो घर में आ गया वो अहल बन गया। तुम तो नबी हो के अहल होने के लिये अहलयीत ज़रूरी होती है। जब तक अहलीयत न हो बेटा भी अहल में शामिल नहीं होता। जनाबे युसूफ (अ0) से तरके औला हुआ। हर एक से तरके औला हो सकता है जब मंज़िल

मोहम्मद (स0) तक आ जाये तो यहाँ तहारत इतनी बलन्द की दामन पर तरके औला के धब्बे भी नहीं। मैं एक बात अर्ज़ करना चाहता हूँ तरके औला ग़लती। तरके औला तो अंबिया से हुआ ग़लती भी हर बंदे से हो सकती है मगर उस पर इसरार नहीं करना चाहिये। बहरसूरत परसों जो मैं मजलिस पढ़ रहा था उस मजलिस में मैंने एक तशबीह दी थी और वो तशबीह अल्लाह की तौफीक व सलबे तौफ़ीक के सिलसिले में ये दी थी कि कुछ लोगों को अल्लाह तौफ़ीक देता है और कुछ लोगों से सल्ब कर लेता है। क्यों सल्ब कर लेता है? इस सिलसिले में मैंने एक मिसाल दे दी थी कि एक लड़का जो कि मुतवज्जे होता है पढ़ने की तरफ़ माँ बाप भी पूरी तवज्जो करते हैं हर सूरत मोहय्या करते है। और जो तवज्जो नहीं करता है तो आख़िर में उससे कतऐ ताल्लुक कर लेते हैं, या उससे निगाह फेर लेते हैं। अब ये कोशिश नहीं करते कि ये पढ़े इसमें मैं ने मिसाल दे दी थी कि अब तुम कुछ नहीं कर सकते तो दर्ज़ी कि दूकान पर बिठा दिया। बाअज़ लोगों को उससे गलत फ़हमी हुई और ये समझे कि मेरी नज़र में दर्ज़ी का पेशा कोई मायूब है। मेरा ये मतलब हरगिज़ न था मैं तो हमेशा इस अशरे में एक दिन ये बताया करता हूँ, कौम के सामने ये कहा करता हूँ कि अल्लाह की नज़र में सब से ज़्यादा ऐब काहिली है पेशा कोई मायूब नहीं। मेहनत व मज़दूरी करके कमाना अल्लाह को बहुत पसन्द है । यहाँ तक इरशाद है कि ''अलकसब हबीबुल्लाह'' मेहनत करके कमाने वाला अल्लाह को महबूब है। और ख़ास तौर पर मैं खयातत के लिये कहता हुँ कि मआज़ अल्लाह अगर ये कोई बुरा पेशा होता तो कभी मलक ये आकर न कहता कि मैं ख़य्यात हूँ। उसका अपने को ख़य्यात कहना दलील है कि पसन्दीदा पेशा था अल्लाह का सिर्फ़ मिसाल उसकी थी कि अगर न पढ़ सका तो उससे सल्ब कर लिया जाता है उस आसानी को जो पढ़ने वाले बच्चे के लिये मोहय्या की जाती हैं लेकिन अगर अंदाज़े तखातुब में कुछ ऐसे जुमले आये हों जो किसी के लिये तकलीफ़ देह हों तो मैं खुदा से पनाह मांगता हूँ कि मेरे जुमले से किसी मोमिन को तकलीफ़ पहुँचे, मेरे जुमले से किसी मोमिन का दिल टूटे। इसलिये कि मोमिन का दिल काबे कि जगह पर है किसी मोमिन का दिल तोड़ना, तकलीफ़ पहुँचाना अगर रवायात में ये है कि ''अफ़ज़लल आमाल बाअदल सलवात अदखालस्सुरूर फ़ी कल्बे मोमिन'' तमाम आमाल में सबसे अफ़ज़ल बात ये है नमाज़ के बाद, कि किसी मोमिन का दिल खुश करो तो दिल खुश करना मोमिन का इतनी बड़ी इबादत है तो किसी मोमिन के दिल को सदमा पहुँचाना और उसको तकलीफ़ देना उतनी ही बड़ी मुसीबत भी होगी। लेहाज़ा अगर किसी को सदमा पहुँचा है तो मैं अर्ज़ करना चाहता हूँ कि उसमें मेरे इरादे को दखल बिल्कुल न था और अगर अंदाज़े बयान की बिना पर सदमा पहुँचा तो अल्लाह से मआज़रत करता हूँ और उन मोमनीन से माअज़रत करता हुँ जिनको सदमा पहुँचा हो।

तो बहरसूरत ये मंज़िल है कि जहाँ पर तहारते अहलेबैत (अ0) बलन्द और जो दामने अहलेबैत (अ0) से वाबस्ता हो जाये तो क्या कहना उसका। मरतबा बड़ा बलन्द पेशा नहीं देखा जाता। मीसमे तम्मार अब कौन मोमिन है जवान के नाम पर फ़िदा न हो जायें। गुलाम थे अली (अ0) के, खरीद के आज़ाद कर दिया था। खुरमे की दुकान रखवा दी थी। आज तक नाम का जुज़ बना हुआ है ''खुरमा फरोश''। और सिर्फ़ यही नहीं कि वो खुरमे बेचते थे खुद अली (अ0) दुकान पर बैठ कर खुरमे फरोख़्त किया करते थे। इसी तरह से असहाबे आइम्मा में बहुत से ऐसे असहाब हैं जिनके नाम का जुज़ बन गया है फलाँ नज्जार, और फलाँ ज़य्यात। मुख़तलिफ़ क़िस्म के पेशे जो उनके नाम का जुज़ हैं। क्योंकि पेशों से अज़मत नहीं होती है किरदार से अज़मत होती है या अमल से अज़मत होती है (सलवात) आओ दरे अहलेबैत (अ0) से वाबस्ता

हो जाओ फिर तुम्हरी मंज़िल क्या कहना। अरब मे सबसे ज़्यादा ज़लील समझा जाता था हब्शी हबश के गुलाम मगर मोअज़्ज़िने रसूल (स0) आइये और देखिये कि अहलेबैत (अ0) ने क्यों कर बनाया वो एक गुलाम ही है क़म्बर की जिनको अली (अ0) अपने फरज़न्द की तरह समझ रहे हैं। सुना होगा आपने कि दो कपड़े खरीदे एक सात दिरहम का एक पाँच दिरहम का। या एक पाँच दिरहम का और एक तीन दिरहम का और जो कम कीमत था वो चुद लेलिया और जो ज़्यादा कीमती था वो क़म्बर को दिया और क़म्बर ने हाथ जोड़कर कहा कि आक़ा ये ज़्यादा कीमती आप को ज़ेब देता है। और अब कहते हैं अली (अ0)। इस्लाम चूँकि गुलामी के ख़याल को दूर करना चाहता है गुलामी की जो ज़िल्लत है उसको अलग करना चाहता है इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छा कपड़ा पहनो मगर अली (अ0) ये नहीं कहते ये कहते तो अहसासे गुलामी तो पैदा ही हो जाता। तो फ़रमाते क्या हैं? नहीं मैं बूढ़ा हूँ और तुम जवान हो और कीमती कपड़ा जवानों को ज़्यादा ज़ेब देता है बनिस्बत बूढ़ों के। ये क़म्बर हैं वफ़ादार। हज्जाज का दौर है और एक मरतबा हज्जाज ने कहा बहुत दिन हो गये हैं कोई अली (अ0) का दोस्त मिला नहीं जिसको कत्ल करूँ खून बहाऊँ। कहा तूने छोड़ा ही नहीं किसी को, अब रह कौन गया है। मगर एक बोला नहीं। अभी तो एक बड़ा बलन्द मरतबा दोस्त रह गया है कहा कौन? कहा अली (अ0) के गुलाम क़म्बर। बस सुना और हुक्म दिया कि जाओ क़म्बर को गिरफ़तार करके लाओ जनाबे क़म्बर आये। हज्जाज जो ज़हहाके अरब कहलाता था। पचास हज़ार दोस्तदाराने अहलेबैत (अ0) को सिर्फ़ जंगों के अलावा तहे तेग किया था। उसके सामने लोग आते थे तो खून खुश्क हो जाता था। वाकेअन ख़ून खुश्क हो जाता था ख़ौफ़ से। आये क़म्बर देखा उसने कहा तुम अली (अ0) के चाहने वाले हो? कहा हाँ। मुझे नाज़ है अली (अ0) की मोहब्बत पर। कहा, क्या अब भी मोहब्बत बाकी है इतने दिन गुज़र गये? कहा जितने दिन गुज़रते जाते हैं मोहब्बत बढ़ती जाती है। कहा, जानते हो क्यों बुलाया है? कहा हाँ जानता हूँ। मैं अपने आक़ा का शुक्रिया अदा कर रहा हूँ कि इतना बुढ़ा हो गया हूँ। कि अब मुझे मायूसी हो गई थी कि अब मुझे शहादत न मिलेगी। लेकिन मोहब्बते अली (अ0) के सदके हो जाऊँ कि इस बुढ़ापे में शहादत का शरफ़ मिलने वाला है। इस बुढ़ापे में शहादत का सवाब मिलने वाला है। जनाबे क़म्बर शहीद किये गये और हज्जाज ने देखा कहा इतना बूढ़ा इतना कमज़ोर और इतना खून बहा मैं ने नहीं देखा हैरत से लोगों से कहा इस से पहले कभी इतना खून मैं ने नहीं देखा तो लोगों ने यही जवाब दिया था कि तेरे डर से जिन को तू बुलाता था उनका खून खुश्क हो जाता था लेकिन ये अली (अ0) का चाहने वाला था इस पर तेरी हैबत थी ही नहीं। इस पर तेरा डर था ही नहीं।

ये हैं अली (अ0) के जाँ निसार अली (अ0) के फ़िदाई देखना हो कैसे होते हैं अली (अ0) के फ़िदाई तो आके करबला में देखो। बहत्तर को देखो जिन्होंने मेआर पेश किया है मोहब्बते अहलेबैत का। कौन है जो उनकी वफ़ाओं को बयान कर सके। हबीब इब्ने मज़ाहिर, मुस्लिम इब्ने औसेजा, ज़ुहैर इब्ने क़ैन वो फ़िदाई वो जाँ निसार जिनका तज़केरा आप सुन रहे थे मगर मैंने अर्ज़ किया कि पाँच महदूद दिन और बहत्तर का तज़केरा कैसे किया जाये? किस का ज़िक्र किया जाये लेकिन पाँच तारीख़ तक असहाब का ज़िक्र था और अब कल से बनी हाशिम का तज़केरा है कल आपने हुसैन (अ0) को पुरसा दिया था उनके जवान फ़रज़न्द का। रसूल (अ0) ने फ़रमाया है मेरे दो फूल हैं एक हसन (अ0) और एक हुसैन (अ0) रसूल (स0) ने इरशाद फ़रमाया है कि दोनों सरदारे जवानाने जन्नत हैं। रसूल (स0) ने फ़रमाया है दोनों इमाम हैं। मरतबे में हसन (अ0) और हुसैन (अ0) के ज़रा भी फर्क

नहीं। आज आपको हसन (अ0) की खिदमत में यतीमे हसन (अ0) का पुरसा देना है वो बच्चा कि जिसके लिये तसरीह लमयबलिग़ अलहलम अरे अभी जवानी की मंज़िल तक पहुँचे भी न थे अभी बालिग़ हुऐ भी न थे, लमयबलग़ अलहलम बारह तेरह बरस का सिन। मगर मालूम नहीं क्या जौहर देखे थे हसन (अ0) ने कि अपनी नेआबत के लिये क़ासिम (अ0) को चुना था करबला में।

जब कुर्बानियों की मंज़िल में देखता हूँ तो नस्ले हसन (अ0) और नस्ले हुसैन (अ0) के तीन फ़रज़न्द एक अली अकबर (अ0) जो मैदाने जंग में आये, तलवारें तीर नैज़े। ज़ख्म खाये, इतना ज़ख्मी हुऐ कि '' कतउहा अरबा अरबा'' रवायत कि लफ़्ज़ें हैं कि टुकड़े–टुकड़े कर दिया। और एक वो फ़रज़न्द जो हाथों पर बलन्द जिसके लिये फ़रमा रहे हैं कि उसकी माँ का दूध खुश्क हो गया है। जो तीरे हुरमुला का निशाना बना ये दो फ़रज़न्द करबला में शहीद हुए और एक वह फरज़न्द जो बिस्तरे बीमारी पर करबला के सब मसायब झेले मगर शहीद नहीं। हुआ। भूखा भी रहा प्यासा भी रहा मज़ालिम झेले, मगर नस्ले इमामत को बचाना था लेहाज़ा इमामे ज़ैनुल आबेदीन (अ0) बुखार में मुबतेला, बीमारी में मुबतेला, तप में मुबतला, शहीद नहीं हुऐ। तो हसन (अ0) के भी तीन फ़रज़न्द थे करबला में। ज़रा तवज्जो फ़रमायें एक हसने मुसन्ना। जनाबे इमामे हसन के बड़े फ़रज़न्दे ये भी करबला में। अक्सर ज़िक्र नहीं सुना होगा, आप ने भी करबला में हुसैन (अ0) के साथ उन्होंने भी चचा पर जान निसार करना चाही इजाज़त ली। मैदान में आये जंग की। तीर पड़े तलवारें पड़ीं नैज़े पड़े खून बहा। ज़ख्मी हुए गिर गये बेहोश हो गये बेहोशी में पड़े रहे जब ज़मीने करबला हिल रही थी होश न आया जब आवाज़ आ रही। थी ''अला कोतेलल हुसैनो बेकरबला'' उस वक्त बेहोश रहे जब ख़ैमे जले उस वक़्त बेहोश रहे जब बीबियों के सरों से चादरें छिनीं तब भी बेहोश। होश कब आया जब बनीअसद दफ़न करने आये और उन्होंने लाशों को उठाना चाहा तो देखा कि सांस आ जा रही है लेकर गये ईलाज किया गया सेहतमंद हुऐ आज जो हसन (अ0) की औलाद है उन्हीं हसन मुसन्ना के ज़रीऐ से। तो कुदरत ने चाहा कि अगर हुसैन (अ0) की नस्ल कायम रहे तो हसन (अ0) की नस्ल भी कायम रहे। और हुसैन (अ0) का एक फरज़न्द तीर से निशाना बनातो हसन (अ0) का भी एक फ़रज़न्द उस वक्त निकला ख़ैमे से जब हुसैन (अ0) ग़श में पड़े थे जब हर तरफ़ से दुश्मन घेरे हुए कोई तलवार लगा रहा है कोई नैज़ा लगा रहा है एक कमसिन बच्चा घबराया हुआ ख़ैमे से बाहर निकला इधर उधर देखा चचा पर नज़र पड़ी देखा एक ज़ालिम तलवार तोले हुए बढ़ रहा है कि हुसैन (अ0) पर वार करे। बच्चा दौड़ता हुआ आया। क़ब्ल उसके कि वह तलवार चले छोटे बच्चे ने अपने दोनों हाथ उठा दिये। ज़ालिम की तलवार पड़ी दोनो हाथ कट गये। लोग कहते हैं कि बच्चा कमसिन था जानता न था कि तलवार का वार हाथ पर नहीं रुक सकता। मैं कहता हूँ कि बनी हाशिम के नौ दस बरस के बच्चे ये न जानें कि तलवार हाथ पर रूकती है, अरे ये हसन (अ0) के लाल का जज़्बए कुर्बानी था। मेरे हाथ कट जायें मगर मेरे चचा पर ज़ख्म न आये। हाथ कटे जब अबदुल्लाह बिन हसन (अ0) ने आवाज़ दी ''उम्माहो अदरिकनी'' मादरे गिरामीमेरी खबर लीजिए लोग फ़िर यहाँ पर कहते हैं कि कमसिनी की बिना पर माँ को पुकारा क्योंकि कमसिन बच्चे माँ को आवाज़ देते है। लेकिन मैं कहता हूँ कि नहीं इस ख़ानदान का ये अदब था। अरे देख रहे थे कि चचा ग़श में पड़े है कैसे आवाज़ दूँ। अरे अली अकबर (अ0) का लाशा उठा लिया था क़ासिम (अ0) को गले से लगा लिया था अब मेरे चचा में इतना दम नहीं है। माँ को पुकारा था, आवाज़ हुसैन (अ0) के कान में गयी हुसैन (अ0) ने आँख खोली, दोनों हाथ बलन्द किये, बच्चे को गले से लगाया, अरे ये यतीमे हसन (अ0) हुसैन के गले

से लिपटा हुआ था कि एक मरतबा एक तीर आया और बच्चे के गले के पार हो गया ये आखिरी कुर्बानी थी जो हुसैन (अ0) की आगोश में हुई। हाँ हज़रात आज सातवीं मोहर्रम, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन हसन (अ0) का ज़िक्र नहीं होता था। मैंने कहा उस आखरी कुर्बानी का भी ज़िक्र करूँ आज ऐ दोस्तों। आज दो चीज़ें हैं एक तो हसन (अ0) को पुरसा देना है जानते हैं आप कि आज ही का दिन वो है कि इब्ने ज़्याद का हुक्म आ गया कि दरिया पर पहरे बिठा दिये जायें। अब हुसैन के खैमों में एक कतरा आब न पहुँचने पाये। अरे दोस्तों! दिल तड़प जाता है कल से बारिश का सिलसिला। अरे लखनऊ में जल थल भरे हुऐ हैं और हुसैन (अ0) के बच्चे अलअतश अलअतश हाय प्यास हाय प्यास। "अलअतश कदकतलनी" हाय प्यास हमें मारे डालती है। हाँ दोस्तदाराने अहलेबैत मसायब मैं पढ़ चुका लेकिन ज़िक्र किया करता था यतीमे हसन (अ0) क़ासिम का। अब ज़िक्र न करूँ तो शायद उम्मेफ़रवा को शिकवा हो जाये अरे आज मेरे बच्चे का ज़िक्र नहीं किया। क्या मेरा क़ासिम यतीम ज़िक्र के काबिल नहीं था, और शायद हुसैन (अ0) कहें कि अरे तूने ये न देखा कि मेरे बेटे का ज़िक्र किया मगर ये भूल गया कि ये भी तो मेरा दामाद था। अरे उम्मेफ़रवा के लाल का ज़िक्र न किया। तुझे पता नहीं कि मेरी बेटी रंडसाले में थी। अरे क्या तू भूल गया कि जब क़ासिम (अ0) आये हैं और कहा ऐ आक़ा ऐ चाचा आप तो मरने की इजाज़त न देते थे। ज़रा बाबा कि वसीयत तो देखिये। वसीयत थी कि ऐ क़ासिम अरे करबला में मैं तो न हूंगा तुम मेरी तरफ़ से हुसैन (अ0) पर जान निसार करना। कहा बेटा तुम्हें वसीयत की थी तो मुझे भी वसीयत की थी मुझे वसीयत कि थी कि अपनी बेटी फ़ातेमा कुबरा का अक़्द क़ासिम से कर देना। हाँ मालूम होता है कि वसीयत को पूरा नहीं कर रहे हैं बल्कि मुसीबतों को बढ़ा रहे हैं। अरे कोई ऐसी मुसीबत रह न जाये जो करबला में पड़ी न हो अगर कहीं नई दुल्हनें बेवा होती हैं तो मेरी बच्ची भी वो नज़र आये कि जिसके सर से उसके वारिस का साया उठ रहा है। बस अर्ज़ कर चुका। अरे ये क़ासिम वो हैं कि मैदान में जब आये हैं और घोड़े से गिरे हैं और आवाज़ दी कि चचा मेरी मदद किजिये। हुसैन (अ0) आये सरहाने लाशा उठाया बस आख़िरी कलाम में अर्ज़ कर रहा हूँ मगर क्यों कर ले चले सीना सीने से मिला हुआ पैर ज़मीन पर खिंचते जाते हैं ज़रा सुनों दोस्तों मेरी समझ में नहीं आया अरे अभी शहादते क़ासिम के सिलसिले में मैंने पढा़ था जब घोड़े पर सवार करने का मौक़ा आया तो बच्चा इतना कमसिन था कि हुसैन (अ0) ने गोद में लेकर घोड़े पर बिठाया था। अरे जिसका कदइतना छोटा कि गोद में लेकर बिठाया ये क्या हुआ कि सीने से सीना मिला है पैर ज़मीन पर खिंचते जा रहे हैं अरे मालूम होता है घोड़ों की टापों से क़ासिम का जिस्म इस तरह टुकड़े–टुकड़े हो गया कि अब सीने से सीना मिला है पांव ज़मीन पर निशान बनाते जाते हैं।

इरफ़ान की शम्एं

मौलाना शम्सी तेहरानी साहब

अवहाम की जुलमत को मिटाया तूने
इरफ़ान की शम्ओं को जलाया तूने
दुनिया तेरा एहसान न भूलेगी हुसैन
इन्सान को इन्सान बनाया तूने

तशद्दुद का जुनूँ

दुनिया का वही हाले जुबूँ है अब तक
सरमाया ओ दौलत का फुसूँ है अब तक
ऐ हिकमते मज़लूमिये शब्बीर मदद
इन्साँ को तशद्दुद का जुनूँ है अब तक

तारीख़े हुसैन

किरदार से बेगाना हुई जाती है
गुफ़तार की दीवाना हुई जाती है
मिल्लत की ये हालत है तो तारीख़ हुसैन
फ़रयाद, कि अफ़साना हुई जाती है